वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता

रश्मि किरण
शोधार्थी इतिहास विभाग
ल0ना0मि0 विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश

महात्मा गाँधी के विचारों में हिंसा का महत्व सिर्फ कुछ क्षणों के लिए न हो करके बल्कि एक लंब प्रक्रिया तक चलने वाली निरंतर लड़ाई थी जहां हिंसा कुछ क्षणों के बाद अपना दम तोड़ देती तो वही अहिंसा के जरिये एक निश्चित सफलता पायी जा सकती है इस बात से बिल्कुल भी इंकार नही किया जा सकता है, मनुष्य का प्रारम्भिक दौर हिंसक गतिविधियों से भरा रहा है और हिंसा के बल पर ही अपने को युगों–युगों से स्थापित करता आ रहा है लेकिन हिंसा के साथ सत्य, दर्शन, अहिंसा, न्याय और शांति जैसे महत्वपूर्ण साधन भी विकसित होते रहे है जिन्हे नकारा नहीं जा सकता है। आज के बदलते परिवेश में हिंसा यदि बढ़ी है तो उसे रोकने का काम भी हिंसा के द्वारा ही किया जा सकता है। आगे प्रस्तुत पेपर में इन्ही सब बातों पर विस्तारपूर्वक चर्चा किया जायेगा की हिंसा की तुलना में अहिंसा का कितना महत्व है?

मूल शब्द :– महात्मा गाँधी, हिंसा, अहिंसा, साधन, महत्वपूर्ण, संस्कृति, प्रवृतियाँ, शांति

प्रस्तावना

गाँधी के विचार केवल गाँधी युग तक ही प्रासंगिक नहीं थे अपितु उनके विचारों की उज्जवल छाया से मानव–समाज युगों–युगों तक प्रकाशित होता रहेगा। पिछले 70 वर्षें में मानव–समाज में अनेक प्रकार की विषमताएँ हमारे सामने आयी हैं। समाज में हिंसा, लूट–पाट, हत्या, बलात्कार जैसी आपराधिक प्रवृत्तियाँ बढ़ रही है। आज का मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि वह पराये तो क्या अपने सम्बन्धियों की भावनाओं को भी ठेस पहुँचाने में संकोच नहीं करता। धन की पिपास शान्त होने का नाम ही नहीं लेती। जितना मिलता है वह कम प्रतीत होता है और अधिक की चाह बढ़ती जा रही है। धन का मूल्य बढ़ रहा है। और मानव जीवन का मूल्य घटता जा रहा है। मानव समाज में मानवीय भावनाओं का निरन्तर ह्रास हो रहा है जो स्वयं मानवीय हित में नहीं है।

हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण कर रही है। भारतीय सभ्यता और संसकृति की आभा दिनो–दिन क्षीण होती जा रही है। उनका पतन कई अर्थों में राष्ट्रीय पतन कहलाता है। सब जगह अंग्रेजी का बोल–बाला है, अंग्रेजी बोलना प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जा रहा है हिन्दी के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है। आज जबकि विश्व तीसरे विश्व युद्ध की कगार पर खड़ा है और सभी शान्ति के उपाय निरर्थक सिद्ध हो चुके है, तो गाँधी–दर्शन की प्रासंगिकता और भी बढ़ गयी हैं। गाँधी विचारों का आलोक ही हमें उचित मार्ग–दर्शन और प्रेरणा दे सकता है।

राजनीतिक क्षेत्र में

वर्तमान राजनीति में भ्रष्टचार, अपराध और अनैतिकता का साम्राज्य चारों ओर व्याप्त है। वर्तमान में नेताओं की छवि धूमिल हुई है और सामान्य जनता का मोह भंग हुआ है। गाँधी जी की कथनी–करनी तथा विचारों में पारदर्शिता थी। जबकि आज के नेता केवल सत्ता और वोटों की ही राजनीति करना जानते हैं। उनकी कथनी–करनी और विचारों में कोई समानता नहीं है। आज के नेताओं ने राजनीति का अर्थ ही बदल दिया है, 'राज करने की नीति' इसके लिये वे साम, दाम, दण्ड भेद सभी का प्रयोग करते है। गाँधी जी के बाद सम्भवतः ऐसा कोई नेता नहीं हैं जिसकी एक पुकार पर जनता उसके पीछे चल दे।

आज के नेता स्वार्थ लिप्सा में लिप्त है। राजनीति का अपराधीकरण आज कोई नई बात नहीं है। सभी प्रमुख पार्टियों ऐसा न करने के खिलाफ जरूर हैं परन्तु अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष रूप से वे चुनाव के समय टिकट अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को अवश्य देती है। चुनाव के समय बिहार तथा अन्य स्थानों पर उभरती हिंसा तथा बूथों को बन्दूकों के बल पर लूट लेना, लोगों के स्वतन्त्र चुनाव अधिकारी का हनन साधारण बात हो गयी है। सभी पार्टियाँ इसको रोकना चाहती है। किन्तु इसके लिये ठोस नियम तथा इसके पालन की आवश्यकता है। सत्ता में आने के लिए सांसदों की खरीद–फरोख्त बड़े पैमाने पर हो ऐसे समय में गाँधी जी के विचार ही हमें उचित दिशा–निर्देश दे सकते हैं। आज विश्व स्तर पर भी महात्मा गाँधी के विचार अधिक प्रासंगिक हैं।

सामाजिक क्षेत्र में

महात्मा गाँधी नारी स्वतंत्रता के समर्थक थे। सम्भवतः इसीलिए उन्होने स्वतंत्रता संग्राम में नारी सहभागिता को महत्वपूर्ण माना और उन्हें घर की चार दीवारी से निकालकर उपयुक्त वातावरण प्रदान किया। उन्होंने हमारे देश की नारी शक्ति को स्वातंत्रता आंदोलन की शक्ति बनाया और उस शक्ति का उपयोग सामाजिक सुधारों को क्रियान्वित करने में किया।

कुछ हद तक आज हमने समाज और परिवार में स्त्री–पुरूष की समानता को स्वीकारा है जिसके कारण आज की नारी पुरूष के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में आना बहुमूल्य येागदान दे रही है परन्तु अब भी मानसिक रूप से गाँधी जी के विचारों को हम अपने जीवन में लागू नही कर पाये है। जिसके कारण अतिकांश परिवारों में अभी भी पुत्र और पुत्री के भेद के कारण लड़कियो को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर उन्हें कर्तव्य व सेवा का पाठ पढ़ाकर परम्परागत तथा रूढ़िगत श्रृंखलाओं में बाँध दिया जाता है, जो सर्वथा अनुचित है। आज भारत में साम्प्रदायिकता की आग चारों ओर फैली हुई है, इसके लिए भी नेताओं की स्वार्थपरता, भड़काऊ भाषण ही जिम्मेदार है। एक भीड़ को धार्मिक उन्माद का रूप दे देना आज अत्यन्त सरल हो गया है। मानव संवेदना तथा भावना शून्य हो गया है जिसके कारण एक वर्ग को दूसरे के प्रति भड़कना आसान हो गया है।

गाँधी जी ने कहा था, "मै ऐसे भारत के निर्माण के लिए सतत् प्रयत्नशील रहुँगा जिसमें सभी सम्सप्रदायों का मेल–जोल होगा। उसमें स्त्रियों को वही अधिकार दिये जायेंगे जो पुरूषों को प्राप्त है।" वर्तमान में भारतीय संविधान और भारत सरकार की नीतियाँ स्वयं ही गाँधी जी के विचारों की प्रमाणिकता को सिद्ध कर रही हैं कि वे आज के सन्दर्भ में कितने प्रासंगिक है।

आर्थिक क्षेत्र में

गाँधी के विचार इस दृष्टि से प्रासंगिक हैं कि इसने मानवीय भावनाओं का यंत्रीकरण कर दिया है। मशीनों के कारण वयक्ति भावनाओं और अनुभूतियों, संवेदना से विहीन होता जा रहा है। दिनों–दिन भारत में बेरोजगारी का संकट बढ़ता ही जा रहा है। मशीन उपयुक्त हैं जहाँ काम अधिक है परन्तु भारत एक ऐसा देश है जहाँ काम अधिक परन्तु भारत एक ऐसा देश है जहाँ जनसंख्या अधिक और कार्य के अवसर कम।

शिक्षा रोजगारपरक न होने के कारण आज का युवा वर्ग शिक्षा समाप्ति के पश्चात रोजगार ने मिलने पर अपने भविष्य के प्रति चिन्तित व दिगभ्रमित हैं, इसे जहाँ एक ओर युवा शक्ति का नाश हो रहा है वहीं अपराधों की संख्या में निरन्तर वृद्धि भी इसी परिणाम है, अतः भारतीय अर्थ व्यवस्था में बापू के विचार तर्क संगत है।

वर्तमान में हमारा देश आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। सरकार लघु उद्योग, कुटीर उद्योग तथा दस्तकारी को प्रोत्साहित तरिके से समस्या का आंशिक समाधान कर सकती है। जब तक आर्थिक उत्पादन और वितरण सामाजिक कल्याण को ध्यान में रखकर नहीं किया जायेगा तब तक आर्थिक राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास का पर्याय नहीं हो सकता।

सांस्कृतिक क्षेत्र में

आज मद्य–निषेध के क्षेत्र में आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, राजस्थान व देश के अन्य क्षेत्रों में जो अभियान चलाया जा रहा है, व गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता को सिद्ध कर रहा है। आज घर की स्त्री स्वयं इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभाकर न केवल अपने परिवार व समाज का हित कर रही है अपितु देश के विकास में भी योगदान दे रही हैं सरकार को भी पूर्ण से इस क्षेत्र में येगदान देकर कार्यक्रम को सफल बनाने की दिशा में कार्यरत होना चाहिए।

आन्ध्र प्रदेश की महिलाओ ने कुछ साल पहले शराब के विरूद्ध एक जन आन्दोलन छेड़ा था, जिससे प्रेरणा प्राप्त कर वहाँ की सरकार ने अपने यहाँ शराब बन्दी लागू की सन् 1996 में हरियाणा में भी ठीक यही स्थिति उत्पन्न हुई, जब चुनाव में एक राजनीतिक दल ने शराब बन्दी को मुख्य आधार बनाया, चुनाव में विजय प्राप्त कर मुख्यमंत्री श्री बंसी लाल ने राज्य में शराब पर प्रतिबंध लगा दिया किन्तु आज सरकार की मद्यपान की नीति और राजस्व को आधार मानकर की जाने वाली नीलामी और धड़ल्लें से खुल रही शराब की दुकाने गाँधी जी के मद्यपान विरोधी विचारों और आन्दोलन का परिहास करत दिखायी दें रहे है।

शिक्षा

हमारे देश में अभी तक कोई भी ऐसा प्रयास नहीं किया जा रहा है कि हमारी अपनी भाषाओं में उच्च शिक्षा प्रदान की जाये। यह हमारी शिक्षा की सबसे बड़ी असफलता है। रूस ने बिना अंग्रेजी के विज्ञान में इतनी उन्नति की है। स्वतंत्रता के 70 वर्षो बाद भी हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है,, हिन्दी के साथ अपने ही देश में परायों जैसा व्यवहार हो रहा है यह कहाँ तक उचित है? इसी विषय पर प्रसिद्ध विद्वान

विष्णु कान्त शास्त्री का कहना है, "अंग्रेजी जीत रही है और भारतीय भाषाएँ हार रही हैं। अंग्रेजी भाषा हमारे लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गई है। कुकुरमुत्तों की तरह उगते अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों को रोकना होगा।"

गाँधी जी द्वारा निर्धारित बेसिक शिक्षा की नीति को यदि आज स्वीकार किया जाये तो एक ओर श्रम के प्रति लोगों के मन में आदर का भाव ही नही जागृत हो सकेगा बल्कि बेरोजगारी की समस्या का भी कुछ अंश तक समाधान हो सकेगा।

मानव–अधिकार के क्षेत्र में

वर्तमान समय में सरकार ने इस ओर कई सकारात्क कदम उठाये है। सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क दी जा रही है और अगर वे आगे पढ़ने में रूचि रखते हैं तो कई सरकारी, गैर सरकारी संस्थाएँ उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति देती हे, जिससे वे बिना किसी व्यवधान के अपने सपनों को पूरा कर सकें। बालश्रम को रोकने के लिए संविधान में 14 वर्ष से कम आयु के बालकों से काम लेने पर दण्ड का प्रावधान है। श्रमिको के लिए कई कानून बनाए गए है, उनके काम के घण्टों में कटौती, पूरी मजदूरी बोनस के साथ ही काम करते हुए आकस्मिक दुर्घटना होने पर सरकार कम्पनी से उन्हें पूरा मुआवजा दिलवाती है जो उनका हक है। सरकार किसानों को उन्नत बीजों की किस्में तथा आधुनिक उपकरणों के लिए रिआयती दरों पर ऋण उपलब्ध कराती है जिससे उनकी फसल अच्छी हो और उन्हें अपनी फसल के पूरे पैसे मिलें। महिला अधिकारों तथा अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए सरकार ने संविधान में अनेक संशोधन किए है।

इन सब कानूनों के होते हुए भी सरकार की उदासीनता के कारण कोई भी वर्ग अपने अधिकारों को पूरा–पूरा लाभ नहीं पा रहा है, इसके लिए सरकार को कानून का कठोरता के साथ पालन करना चाहिए।

विश्व शान्ति के क्षेत्र में

गाँधी–दर्शन आज अनके समस्याओं के समाधान मे सबसें अधिक कारगर और सहायक सिद्ध हो रहा है। आज जबकि विश्व तीसरे विश्व युद्ध की कगार पर खड़ा है, परमाणु तथा जैविक हथियारों का बढ़ता प्रयोग मानवता के लिए खतरा बन गया है। विज्ञान के प्रयोग ने हमारे जीवन को सुखमय अवश्य बनाया है परन्तु इसके ऋणात्मक प्रभाव को भी नकारा नहीं जा सकता है। यंत्रों के अत्यधिक प्रयोग के कारण सम्भवतः मानवीय भावनाओं का भी यंत्रीकरण हो गया है, वे समाप्ति की ओर अग्रसर है। कि उन्नति वे प्रगति के कारण भी समाज में तथा मानव जीवन में रिक्तता का अनुभव हो रहा है। यह रिक्तता तभी पूर्ण हो सकती है, जब मानव स्वयं इस पर चिन्तन मनन करें और यह चिन्तन आशावादी आत्मिक सुखोकी दिशा में होना चाहिए। गाँधी जी का मानना था केवल मस्तिष्क, केवल शरीर और केवल भौतिक दृष्टि से ही विकास करना र्प्याप्त नही, इसके स्थान पर दया, प्रेम, सेवा और जीवन के नैतिक मूल्यों को महत्व देना होगा।

आज गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता सभी क्षेत्रों में बढ़ी है, "गाँधी जी स्वयं शान्ति के मूर्तिमान रूप थे। उनके लिए व्यक्ति के जीवन और सम्पूर्ण समाज के सन्दर्भ में अत्यधिक आनन्द शान्ति में निहित था।" उनका मानना था कि शान्ति सीधे गाँव के व्यक्ति से प्रारम्भ हो, उनका अटल विश्वास था जिस राष्ट्र का आधार शान्ति है उसी के पास विश्व में शान्ति स्थापित करने की शक्ति हो सकती है। गाँधी जी द्वारा संचालित आंदोलन स्वयं ही विश्व शान्ति के क्षेत्र में एक बड़ा अभूतपूर्ण कदम था। उन्होंने कभी भी ब्रिटिश साम्राज्य के लिए हिंसा के प्रयोग को उचित नहीं माना और हृदय परिवर्तन पर बल दिया। डी0जी0 तेन्दुलकर के शब्दों में 'गाँधी जी ब्रिटेन और भारत के बीच ही नहीं दुनिया के समस्त युद्धरत देशों के बीच शान्ति स्थापित करना चाहते थे। सार रूप मे हम कह सकते है 70 वर्षों बाद भी गाँधी–दर्शन की प्रासंगिकता कई संदर्भों में पहले की अपेक्षा और भी अधिक बढ़ी हैं।

हेनरी लेविस मार्गन के शब्दों में "श्रम का स्पष्ट रूप से विभाजन महिला और पुरूष के शारीरिक सम्बन्ध से स्पष्ट होता हैं इसी के आगे चलकर परिवार बना तो निजी सम्पति बनी अब इस सम्पति को प्राप्त करने के लिए परिवार में लड़ाई भी होगी तो वहां हिंसा होना अनिवार्य है कहने का अर्थ हैं की परिवार, समुदाय, विचार, मनुष्य की संतान, हिंसा की वैधता को सिंद्ध करते हैं यही सब चलकर एकल परिवार को जन्म देती हैं यानि सम्पादित को लेकर जो परिवारों में लड़ाई होती हैं उसी ने एकल परिवार को जन्म दिया हालाकि इसी ने संयुक्त परिवार को भी तोड़ कर रख भी दिया यूथ का जन्म कहाँ होता हैं।

यूथ यानि नया युवा वर्ग नयी पीड़ी का जन्म कहीं भी हो सकता हैं यह पशुओं के समाज में भी और मनुष्यों का समाज में भी ऐसी ही बातों का उल्लेख करते हुए एस्पिनास ने लिखा की दोनों में सिर्फ सभ्यता और संस्कृति का अंतर हैं (एस्पिनास, पशु समाज, 1866) लेकिन दोनों समाजों में हिंसा होती इसका अर्थ हैं कि जो सभ्यता और संस्कृति दूसरे लोगों को पसंद हो वह अन्य लोगों को भी पसंद हो यह कोई जरूरी नहीं है अतः किसी के लिए हिंसा सही हैं

तो किसी के लिए गलत हैं। रविन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं कि यदि मनुष्य में से संस्कृति और सभ्यता निकाल दिया जाये तो वह भी पशुओं की तरह ही व्यवहार करेगा इसलिए 1922 मे जो कुछ भी असहयोग आन्दोलन में हुआ उसके दोषी सिर्फ उनके अन्दर का जानवर था।

कार्ल–मार्कस ने कहा हैं की दूनिया के मजदूर एक हो जाओं पुंजीपतियों के खिलाफ एक हो जाओ इसका अर्थ था कि मजदूर अपने श्रम की महत्ता को समझें और पुजीपतियों के खिलाफ एक हो करके उनके खिलाफ विद्रोह कर दें इस मे भी हिंसा छिपी थी पर यह हिंसा काफी सफल भी हुई इसी का समर्थन करते हुए लेनिन ने कहा कि सामाजिक क्रांति का सबसे गहरा कारण नई उत्पादन शक्ति और पुराने पड़ गये उत्पादन सम्बन्धों के बीच उत्पन्न अंतर्विरोध का होना है।

इससे स्पष्ट होता हैं कि कोई क्रांति तभी सफल होगी जब जनता की भागीदारी होगी चाहे वह सामाजिक क्रांति हिंसा पर आधारित थी पर वह वैध थी क्योंकि यह सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण इलाकों में है जहां हर रोज हिंसा हो रही है इसका कारण सरकारी प्रसाशनिक, राजनीतिक हस्तक्षेप का बढ़ना हैं कोई भी आदिवासी यह नही कहता है कि आप यहँ फैक्ट्री नही लगाये आप फैक्ट्री लगायें पर हमारी भी कुछ शर्ते हैं आप हमारी सांस्कृति मे हस्तक्षेप नहीं करेगे, फैक्ट्री में काम देंगे पर सरकार का अड़ियल रवैया उन्हें हिंसा करने पर मजबूर कर देता है कहने का अर्थ है कि राज्य द्वारा प्रायोजित आत्याचार और हिंसा नक्सलियों के द्वारा की जा रही हिंसा को वैधता प्रदान करते हैं लेकिन अब परिवर्तन हो रहा है ज्ञान कि नई धार वह थी शिक्षाा का विस्तार, शिक्षा के द्वारा लोगों के अन्दर चेतना जागी वही चेतना गुलामी को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इसी का नतीजा हैं कि जां हिंसा लोंगों को एक साथ लाने के बाद बिखेर देती हैं वही गाँधी के विचारों को आज के समय में दर्शन के संकट से परेशान मानवता समझने लगी है शायद मनुष्य के भविष्य के लिए इसे और भी समझने की जरूरत है इस बात से उग्र किस्म के आधुनिकतावादी और भारतीय मूल के पश्चिम सोच वाले कुछ बुद्धिजीवी भले ही सहमत न हों पर दुनिया के बड़े हिस्से के बौद्धिक जगत में गाँधी के विचारों का पुनर्पाठ यह दिखाता हैं कि गैर–यूरोपीय ज्ञान परम्पराओं के बारे में उनके विचार मानव जति के लिए बेहद उपयोगी हैं इस संदर्भ में कुछ उदाहरणों के विश्लेषण से बात और भी स्पष्ट होती है।

जितना महत्व हिंसा का हैं उतना ही महत्व अहिंसा का है यह सही हैं कि अंग्रेजों की प्रताड़ना से परेशान होकर के ही 1922 में 21 पुलिसकर्मियों को जनता ने आग के हवाले कर दिया था यह सही है की अभाव मनुष्य द्वारा स्थापित नियम–कानून का उल्लंघन करने को प्रोत्साहित करते हैं, परन्तु खुद बहुत ज्यादा हिंसक कार्य कर गुजरने की प्रेरणा, हिम्मत और योग्यता देने से परहेज करना चाहिए भूख से दुर्बल आदमी लड़ने मे तो कमजोरी का अनुभव करता ही है, उस नारा लगाने में भी परेशानी होती है यहीं से हिंसा का महत्व कम होता जाता हैं और हिंसा का महत्व आरम्भ हो जाता हैं 1822 में गाँधी जी असहयोग आन्दोलन के द्वारा यही बताना चाहते थे कि हिंसा के द्वारा सिर्फ और सिर्फ शारीरिक कमजोरी के अलावा कुछ नहीं होगा दुनिया में ऐसे अकाल पड़े है, जो बना किसी राजनैतिक विद्रोह आपसी लड़ाई और बिना वर्चस्व के ही गुजर गया।

उदाहरण के लिए 1840 में आयरलैंड का अकाल इतनी शांति से बीता कि उनके ही बीच होकर शैनन नदी से खाने–पीने से सभरे जहाज पर जहाज गुजरते चले जाते थे और वहाँ भूख से तड़पते लोगों ने एक बार भी हमला नहीं किया कहने का अर्थ हैं कि जिस लोगों ने एक बार भी हमला नहीं किया कहने का अर्थ हैं कि जिस देश में खाने–पीने का सामान का अकाल पड़ा हो वहाँ हिंसा करके अपनी कमजोरी में वृद्धि करना मूर्खता ही है यही कारण हैं कि आयरलैंड के लिए 1840 का वर्ष बहुत ही शांति का समय रहा यही काम गाँधी जी करने की कोशिश कर रहे थे ताकि असहयोग आन्दोलन पूरे भारत में शांतिपूर्ण तरीके से विस्तार करके आजादी को प्राप्त कर दिया जाये और धन–जन की कम हानि हो जब हम किसी अन्याय या हिंसा का सक्रिय अहिंसक प्रतिरोध भी करते हैं तो वह न केवल अन्याय की मिटाने के लिए होता हैं, बल्कि अन्याय रूपी आत्मा और सवरूपी आत्मा के द्वैत को भी मिटाता हैं। क्योंकि अन्य के प्रति उत्तरदायित्व का अनुभव करने का तात्पर्य अन्य में निहित स्व की तलाश करने में प्रवृत होता हैं।

गाँधी ने आधुनिकता के इसी दंभ कि प्रतिक्रिया में अहिंसा का मार्ग सुझाया और अहिंसा के लिए गाँधी का तर्क मीमांस की कसौटि पर बिलकुल खरा उतरता हैं सामाजिक क्रांति का अर्थ समाज के बौद्धिक जीवन तथा उसकी संस्कृति में गहन परिवर्तन से भी हैं यही कारण हैं कि हिंसा और अहिंसा में सिर्फ "अ" का अंतर हैं यही एक शब्द किसी भी क्रांति को सफल या असफल बना सकती हैं, पर सबसे बड़ा प्रश्न हैं कि क्रांति का स्वरूप क्या होना चाहिए? हालांकि कोई भी क्रांति दो या चार लोगों से ही शुरू होती हैं पर सफल जनता कि भागीदारी से ही होती हैं इसका

सबसे अच्छा ऊदाहरण अन्ना का आन्दोलन तथा जो दिल्ली में जनता की सहभागिता से तो सफल हुआ पर वही मुंबई में जनता के न जाने से आन्दोलन पर काफी प्रभाव पड़ा और आन्दोलन कुछ हद तक असफल भी रहा पर यह कहना आन्दोलन पूरी तरह से असफल रहा तो यह गलत तथ्य हैं क्योंकी इसी आन्दोलन की वजह से ही दिल्ली के साथ–साथ पूरे भारत में कांग्रेस कि बरी तरह से हार हुइ और उनका जनाधार भी कम हुआ यह सब इसी आन्दोलन का नतीजा थ यही कारण हैं जो असहयोग आन्दोलन 1922 में गाँधी जी नेतृत्व में कुछ हद तक असफल हो गया तथा वही 1930 के सवनिय अवज्ञा में भारी सफलता मिली थी इसलिए हर क्रांति में हिंसा और अहिंसा को कैसे लागू किया जाए? इसका एक ही जवाब वह है समझौता। सभी लोग जानते है कि युद्ध हमेशा खतरनाक ही होता है। इसमे कई मासूम जिंदगी दांव पर लगी होती है, लेकिन इस के बावजूद युद्ध होते है युद्ध होने के कई कारण हो सकते हैं निजी सम्पति की लड़ाई, अस्तिव की लड़ाई, वर्चस्व कि लड़ाई इत्यादी यदि सभी देश आपस में यह संधि कर लें कि "अब हम युद्ध नहीं करेगे, सभी कार्य शांतिवार्ता से ही करेगें तो सच मानिये कि अमेरिका एक शक्तिशाली देश नही रह जायेगा, क्योंकि युद्ध ही एक ऐसा साधन हैं जो दूसरे देश को अपनी ताकत दिखाने का मौका प्रदान करता है क्योंकि यदि युद्ध ही नही होगें तो ये देश अपना हथियार कहाँ बेचेंगे? जब हथियार ही नही होगें तो सभी देश कुछ हद तक शांति की प्रक्रिया को अपनाएगें असहयोग आन्दोलन भी शुरू करने का भी यही उद्देश्य था कि लोग शांति प्रक्रिया को अपनाते हुए भारत कि आजादी को प्राप्त करें असहयोग आन्दोलन की सबसे बड़ी सफलता थी कि उस आन्दोलन को कई बरसों बाद एक अच्छा नेता मिला था जिसे पता था कि कहाँ रूकना है और फिर कब चलना है असहयोग आन्दोलन के कारण ही लोगों के अन्दर देश प्रेम कि भावना जागी, स्वदेशी वस्तुओ कों एकजुट इसी आन्दोलन ने किया यही असहयोग आन्दोलन कि सबसे बड़ी सफलता थी

अब भारत को आजाद हुए 65 साल से भी ज्यादा हो गए हैं आज भी आंदोलन हो रहे हैं हिंसा और अहिंसा भी रहा हैं लेकिन 1920 के असहयोग आन्दोलन और 2014 के असहयोग आन्दोलन में अब फर्क आ गया हैं यूक्र कह तो आनेलन का स्वरूप ही बदल गया हैं जिस तरह से प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में सामनतादी व्यवस्था थी 1947 में आजादी के बाद इसे समाप्त कर दिया गया पर सच यह हैं कि सामन्तवादी वयवस्था खत्म नहीं हुई हैं आज यह एक पूँजीवादी के रूप में देश के हर कोने में मौजूद हैं इसी तरह असहयोग आन्दोलन भी 21 ईस्वी सदी में खत्म नही हुआ बल्कि इसका स्वरूप ही बदल गया।

चाहे वह जयप्रकाश नारयण का इंदिरा गाँधी के विरूद्ध में की गयी सम्पूर्ण क्रांति हो या निर्भया कांड में दिल्ली में किया गया युवाओं का आन्दोलन हों इन दोनों में हिंसा हुई थी पर दोनों क्रांतियो में सफलता जरूर मिली थी दोनो क्रांतियों में जनता ने सरकार को पूरी तरह से बहिष्कार किया और देश के व्यवस्था को ही बदल कर रख दिया अब यह सत्य प्रकट हो गया हैं कि धरती गर्म हो रही हैं हिमालय का ग्लेशियर पिघल रहा हैं नदियाँ प्रदूषण का शिकार हो चुकी हैं जंगल का विनाश बड़े पैमाने पर हो चुका हैं जमीन उसर हों रहे हैं पलायन कि समस्या बढ़ रही हैं इसका समाधान क्या हैं? यह सब प्रश्न आज से ही नहीं गाँधी के समय से ही मौजूद हैं।

निष्कर्ष

अब समय आ गया है कि हम गाँधी के विचारों को समझे और जाने आधुनिकता अपनी सफलता के नशे में इतना मस्त हो गयी है कि संवाद की संभावना को ही भूल गयी है गाँधी के दैहिक अवसान से शायद इस मूल्य को पुनः स्थापित करने वाली रोशनी बुझ गयी थी ! बुझी नही थी, शायद धीमी हो गयी थी इसलिए दुनिया भर में जो लोग आज सड़क पर उतर रहे हैं उन्हें अभी भी रोशनी गाँधी से ही मिल रही हैं चाहे किसी भी आन्दोलन में हिंसा हो या अहिंसा गाँधी जी के सिद्धांतों को नजर अंदाज नही किया जा सकता हैं अंत में , मैं अपनी बात इस शब्द से खत्म करना चाहूँगा जो वाकई में गाँधी के बातों को मजबूती प्रदान करती है,

"जो कुछ भी हो.....विजय हमारी होगी"

संदर्भ सूची :–

- 'समय : सन्दर्भ और गाँधी'–शंकर दयाल सिंह।
- 'समय सपनों का भारत'–गाँधी जी।
- 'मेरा समाजवाद'–गाँधी जी।
- 'आज का भारत'–ए0के0 सिंह।
- 'गाँधी व्यक्तित्व विचार और प्रभाव'–प्रस्तावना से उद्धृत (सम्पादक) काका कालेलकर।
- 'गाँधी जी ने कहा था–शराब बन्दी करें'।
- 'शिक्षा की समस्या'–गाँधी जी।

- 'विश्व शान्ति और महात्मा गाँधी'– कुमारी निवेदिता शर्मा।
- 'गाँधी जी कहा था'– मो0 क0 गाँधी।
- ऐगेल्स, फ्रेड्रिक, परिवार राज्य और निजी सम्पति,
- जार्ज डैनिसन, बच्चो का जीवन,
- सेन, अमर्त्य, हिंसा और अस्मिता का संकट
- आचर्य, ननद किशोर, सम्याग्रह की संस्कृति